# अमरकान्त और मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़
आगरा की हिन्दी विषय की पी–एच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

'रूपरेखा'

सन्–2015


**निर्देशिका :**

प्रो. शर्मिला सक्सेना
हिन्दी विभाग
कला संकाय

**शोधार्थिनी :**

कंचन बंसवाल
एम.ए., एम.फिल् (हिन्दी)

**हिन्दी विभागाध्यक्ष**

प्रो. शर्मिला सक्सेना

**कला संकाय प्रमुख**

प्रो. रागिनी रॉय



(हिन्दी विभाग – कला संकाय)
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़
आगरा– 282005

# अमरकान्त और मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना

## शोध परिचय

कहानी अपने आप में विकसित एक स्वतन्त्र कला है। विकास को प्राप्त करते–करते आज कहानी का स्वरूप काफी बदल गया है। वह आज के युग की बड़ी उपयोगी कला है। आज का कहानीकार जीवन के अन्तर और वाह्य में स्थित तनाव, द्वन्द्व और त्रासद स्थिति के प्रति पाठक को सजग करता हैं। हिन्दी कहानी–साहित्य अन्य साहित्यांगों की अपेक्षा गतिशील है। कहानी साहित्य का वह अंग है जिसमें कल्पना, भावोन्मेष तथा मनोरंजन के साथ–साथ ज्ञान विशेष भी निहित रहता है। अतः कहानी मानव जीवन के सत्यों का गहराई के साथ रहस्योद्घाटन करती है।

हमारे समाज में विभिन्न धर्मों जातियों, सम्प्रदायों तथा वर्गों के लोग रहते हैं। अपने–अपने पारिवारिक माहौल और वातावरण के अनुसार ही वे अपना जीवन व्यतीत करते हैं। यदि हम वर्गों की बात करें तो हमारे समाज को आर्थिक आधार पर उच्च, मध्यम और निम्न तीन वर्गों में विभक्त किया गया है।

हिन्दी साहित्य कोश में मध्यवर्ग के संदर्भ में लिखा है– **"पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने समाज को इतना जटिल कर दिया है कि एक मध्यवर्ग की भी आवश्यकता हुई, जो इस जटिल व्यवस्था के संगठन सूत्र को संभाल सकें। इस वर्ग में नौकरी पेशा शिक्षक, क्लर्क और अन्य साधारण लोग आते हैं। मध्यवर्ग विशेष तथा बुद्धि प्रधान वर्ग माना गया है और सामाजिक क्रान्ति के प्रायः समस्त विचारों का सर्जन मध्यवर्ग में ही होता है।"**

मध्यवर्ग के सम्बन्ध में डॉ० लाजपतराय गुप्त लिखते है– **"धनवान व्यापारी तथा उच्च सरकारी नौकरी प्राप्त व्यक्ति पूँजीपति वर्ग के अधिक निकट है और छोटे–छोटे व्यापारी तथा सरकारी सेवा में साधारण व्यक्ति जो श्रमिक वर्ग से कुछ अधिक सम्पन्न है, वे व्यक्ति मध्यवर्ग में गिने जाते हैं।"**

मानक हिन्दी कोश के अनुसार मध्यवर्ग याने "मनुष्य समाज के आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से विभाजित वर्गों (उच्च, मध्य और निम्न) में से बुद्धि प्रधान एक वर्ग जो समान्य आर्थिक स्थिति तथा सामाजिक स्थिति वाला समझा जाता है और उच्च वर्ग (धनी वर्ग) और निम्न वर्ग (श्रमिक वर्ग) के बीच में माना जाता है।"

अमरकान्त का जन्म 1 जुलाई 1925 ई० को उत्तर प्रदेश के 'बलिया' जिले के भगमलपुर नामक स्थान पर हुआ था। सन् 1946 ई० में अमरकांत ने बलिया के सतीश चन्द इण्टर कालेज से इण्टरमीडिएट की पढ़ाई पूरी कर बी.ए. प्रयाग विश्वविद्यालय से किया। बी.ए. पास करने के बाद आपने दैनिक पत्र सैनिक (आगरा) में नौकरी करते हुए हिन्दी साहित्य की सेवा करने का निश्चय किया। अमरकान्त की प्रसिद्धि नई कहानी की प्रतिष्ठा के साथ ही हुई थी। अमरकांत ने कहानी, उपन्यास, संस्मरण तथा बाल साहित्य पर अपनी लेखनी विशेष रूप से चलाई। आपने 'जिंदगी और जोंक' देश के लोग, मौत का नगर, मित्र मिलन, कुहासा, तूफान, कलाप्रेमी, एक धनी व्यक्ति का बयान, सुख और दुःख के साथ, जांच और बच्चे, औरत का क्रोध नामक कहानी संग्रहों की रचना की हैं। अमरकान्त की कहानियों में निम्न मध्यवर्ग एवं मध्यवर्ग का यथार्थ चित्रण मिलता है। प्रेमचन्द की परम्परा को अग्रसर करने का काम नई कहानी के दौर में सशक्त रूप में अमरकांत ने किया है। 13 मार्च 2012 को इलाहाबाद में ज्ञानपीठ के निदेशक रवीन्द्र कालिया ने अमरकान्त को ज्ञानपीठ पुरस्कर से सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त विभिन्न साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का पुरस्कार, यशपाल पुरस्कार, जन–संस्कृति सम्मान, मध्य प्रदेश का 'अमरकान्त कीर्ति' सम्मान, साहित्य अकादमी सम्मान, आदि से अलंकृत हुए।

मार्कण्डेय का जन्म 2 मई 1930 को उत्तरप्रदेश राज्य के जौनपुर जिले के केराकत तहसील के बराई गॉव में एक किसान परिवार में हुआ था। मार्कण्डेय एक ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने जिन्दगी में कभी नौकरी नहीं की। वे आजीवन लेखन करते रहे। उनका जीवन साहित्य को समर्पित है। मार्कण्डेय जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। फिर आप प्रतापगढ़ आए और वहाँ 'प्रताप बहादुर इंटर मीडिएट कॉलेज' में इण्टर तक की शिक्षा

प्राप्त की। बाद में वे इलाहाबाद आए और यहीं से आपने हिन्दी में एम.ए. किया। मार्कण्डेय के 7 कहानी का संग्रह हैं जो इस प्रकार हैं– पान–फूल, महुए का पेड़, हंसा जाई अकेला, भूदान, माही, सहज और शुभ, बीच के लोग। मार्कण्डेय जी की अधिकांश कहानियाँ ग्राम–जीवन की समस्याओं को लेकर लिखी गयीं हैं। इन्होंने वर्ग वैषम्य, शोषण, असमानता, रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों पर उन्होंने अपनी कहानियों में कठोर प्रहार किये हैं। मार्कण्डेय अपनी इन कहानियों में भारतीय ग्राम जीवन से अपने रागात्मक संबंधों की छाप ही नहीं छोड़ते, वे उस जीवन की विकृतियों और अंतर्विरोधों को भी देखते हैं। मार्कण्डेय ने सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध भी किया है जो मध्यवर्ग में प्रमुख रूप से दिखाई देता है। मार्कण्डेय को उत्तरप्रदेश 'साहित्य भूषण पुरस्कार, राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, प्रेमचंद पुरस्कार (अग्निबीज के लिए) और उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की ओर से हिन्दी गौरव सम्मान (2005) आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया हैं।

## प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा व चयन

साहित्य के किसी भी विषय को शोध अध्ययन का आधार बनाने से पूर्व उसकी सम्पूर्ण अवधारणा व विविध प्रतिमानों से अवगत होना पड़ता है। पी–एच.डी. में नामांकन होने के उपरान्त मैंने अमरकान्त और मार्कण्डेय की कहानियों को पढ़ना आरम्भ किया। दयालबाग विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में मुझे 'हिन्दुस्तानी' पत्रिका में निकले अमरकान्त विशेषांक प्राप्त हुआ। जिसे पढ़ने के बाद मेरी अमरकान्त पर शोध करने की इच्छा बलवती हुई। इसके अतिरिक्त अमरकान्त के समकालीन लेखकों का अध्ययन करते समय मेरी दृष्टि मार्कण्डेय की ओर विशेष रूप से गई क्योंकि मार्कण्डेय ने भी मध्यवर्ग की विभिन्न समस्याओं को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अतः मैंने अमरकान्त और मार्कण्डेय दोनों की कहानियों को लेकर शोध करने का निश्चय किया।

इसके उपरान्त प्रस्तुत विषय "अमरकान्त और मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना" के निर्धारण में मेरी निर्देशिका प्रो. शर्मिला सक्सेना ने मेरी सहायता की। इसके बाद विषय से सम्बन्धित सामग्री संकलन हेतु मैंने डॉ. भीमराव अम्बेडकर, दयालबाग एजुकेशनल

इन्स्टीट्यूट एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के पुस्तकालय को आधार बनाया। विषय से संबंधित सभी सामग्री का संकलन करने के पश्चात "अमरकान्त **और मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना"** विषय पर शोध कार्य करने की मेरी इच्छा बलवती हो गयी।

## प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य

इस अनुसंधान के माध्यम से अमरकांत और मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना को उजागर करने का प्रयास किया जायेगा। जिसमें आम आदमी के जीवन संघर्ष को प्रकट करने की सफल कोशिश की गयी है। आम आदमी में मजदूर, निम्न मध्यवर्गीय किसान, खेतिहर मजदूर, कम वेतन पाने वाला शिक्षक, चपरासी और अन्य शोषित पीड़ित लोगों का संसार शामिल है।

अमरकांत आम आदमी के कथाकार हैं। निम्न और मध्यवर्ग। अमरकांत की कहानियाँ 'मोहभंग' के युग की है पर उनकी कहानियों में जिंदगी के लिए लड़ता हुआ सर्वहारा है। उनके पात्र निजि व्यक्तित्त्व रखने के बावजूद अपने वर्ग के प्रतिनिधि साबित होते हैं। अमरकान्त ने मुख्य रूप से निम्न मध्यवर्ग के जीवन संघर्ष को अपनी कहानी में स्थान दिया है। अमरकान्त के सभी कहानी पात्र अर्थाभाव से ग्रस्त दिखाई पड़ते हैं। 'डिप्टी क्लक्टरी' के बाबू शकलदीप, 'सवा रुपये' के बूढ़े बाबा जी 'नौकर' का जंतू, जिन्दगी और जोंक का रजुआ आदि सभी पात्र आर्थिक– विवशताओं से घिरे किसी तरह जीवन यापन कर रहे हैं। इन व्यक्तियों की मर्मस्पर्शी करूणा एवं बेबसी को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना शोध विषय का उद्देश्य है।

इसी प्रकार मार्कण्डेय ने भी अपने साहित्य में स्वाधीनताकालीन ग्राम–जीवन में आये हुए परिवर्तनों को वास्तविक रूप में अंकित किया है। आपके कहानी साहित्य का केन्द्र बिन्दु गाँव रहा है 'जूते' कहानी में बालक मनोहर की दरिद्रता अंकित की है। 'सहज और शुभ' में आर्थिक विपन्नता, अंधश्रद्धा विरोध का वर्णन हुआ है। 'वासवी की माँ' शहरी मध्यवर्गीय परिवेश की कहानी है। तो वहीं 'संगीत, आँसू और इंसान' कहानी रेल के भिखारी के करूणाजनक जीवन स्थिति पर आधारित है। इस प्रगतिशील विचारधारा के कहानीकार का उद्देश्य केवल

स्वाधीनकालीन किसान एवं मजदूर के शोषण का चित्रण करना ही नहीं, बल्कि होने वाले शोषण के प्रति किसान–मजदूर को सचेत करना हैं मार्कण्डेय का मजदूर अन्याय नहीं सहना चाहता। चेतना के कारण ही वह जो कुछ नहीं है। उसे पाने में और जो कुछ है उसे बचाये रखने में प्रयत्नशील है। मार्कण्डेय की कहानियों के माध्यम से भारतीय ग्राम्य समाज के मध्यवर्ग की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप का यथार्थ चित्रण करना मेरे शोध विषय का उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त अमरकान्त और मार्कण्डेय के कथा जगत के पात्र भी पड़ताल की विशेष आवश्यकता रखते हैं।

## शोध विषय का महत्त्व

गद्य साहित्य की कहानी विधा अभिव्यक्ति का एक ऐसा सहज व सशक्त माध्यम बन गया है जो जन साधारण को भी अपनी ओर आकर्षित करता है व्यक्ति कहानियों को पढ़कर अथवा सुनकर उसमें उठाये गये प्रश्न व उद्देश्य को समझ सकता है। प्रस्तुत शोध विषय में अमरकांत और मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना का विवेचन किया जायेगा। तत्कालीन समाज में अंधविश्वास एवं कुरीतियाँ अपनी जड़े जमा चुकी थीं। कभी–कभी भोली भाली जनता उनकी बुराइयों को समझकर भी अपनी रुढ़िवादी मानसिकता के कारण उन्हें त्यागने का साहस नहीं जुटा पाती थी। ये अंधविश्वास समाज को भीतर से खोखला बना रहे थे। मध्यवर्गीय चेतना के उदय होने से जीवन के प्रति नवीन मूल्यों की उद्भावना हुई। प्रस्तुत शोध विषय में अमरकान्त और मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना को प्रस्तुत किया गया है इस विषय के अध्ययन के बाद हम मध्यवर्ग की विभिन्न समस्याओं को जान पायेंगे जिसमें गरीबी, भूख, मानसिक उत्पीड़न सामाजिक शोषण तथा पारिवारिक विघटन आदि आते हैं।

## अनुसंधान पद्धति

मानव एक ऐसा जिज्ञासु और बुद्धिजीवी प्राणी है जो अपनी जिज्ञासा की पूर्ति हेतु निरन्तर शोध व अनुसंधान करता रहता है। मानव में यह प्रवृत्ति जन्मजात होती है जिसके

कारण अनुसंधान उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चलता ही रहता है। साहित्य के क्षेत्र में चलने वाला अनुसंधान एक विशेष प्रकार का होता है क्योंकि  वह साहित्य में विद्यमान समाज के यथार्थ को लेकर चलता है। अनुसंधान की अनेक पद्धतियाँ प्रचलन में हैं। मेरे शोध विषय में अमरकान्त और मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना का तुलनात्मक अध्ययन हेतु तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। इसके साथ ही विवेचनात्मक, वर्णनात्मक, आलोचनात्मक व विवरणात्मक पद्धतियों का भी अवलम्ब किया जाएगा।।

## प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व हुआ कार्य–

शोध कार्य हेतु अमरकान्त एवं मार्कण्डेय पर मेरे द्वारा चयनित विषय 'अमरकान्त और मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना' पर मेरी दृष्टि में अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरे द्वारा विविध विश्वविद्यालयों की शोध सूची पत्र को भली प्रकार देखा गया और उनमें मुझे कहीं भी अमरकान्त के ऊपर कोई शोध कार्य नहीं प्राप्त हुआ रवीन्द्र कालिया ने अमरकांत के ऊपर एक आलोचनात्मक पुस्तक लिखी है। विविध शोध सूची पत्रों के अनुशीलन से मुझे पता चला कि मार्कण्डेय एवं पुंडलीक पर गोवा विश्वविद्यालय में एक शोध प्रबन्ध लिखा गया है इसके अतिरिक्त बहुत गहनता से शोध करने पर भी मुझे आपके सन्दर्भ में अन्य कोई सामग्री प्राप्त नहीं हुई।

अमरकांत और मार्कण्डेय के तुलनात्मक अध्ययन पर किसी प्रकार का शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरे शोध कार्य से पूर्व अमरकांत और मार्कण्डेय पर जो शोध कार्य किया गया है उसकी सूची दी जा रही है जिसके द्वारा यह सत्य निर्धारित हो जाता है कि शोध कार्य का विषय मौलिक व भिन्नता लिये हुए है।

1. मार्कण्डेय एवं पुंडलीक नायक के आंचलिक कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

शोध छात्रा – वृषाली सुभाष माद्रेकर

गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

2. अमरकान्त : एक मूल्यांकन (आलोचनात्मक ग्रन्थ)

रवीन्द्र कालिया

सामयिक प्रकाशन (2012)

3. नयी कहानी और अमरकांत (आलोचनात्मक ग्रन्थ)

निर्मल सिन्हल

राधाकृष्णा प्रकाशन (1999)

शोधार्थिनी :

**कंचन बंसवाल**

# अमरकान्त और मार्कण्डेय की कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना

**प्रथम अध्याय–अमरकान्त और मार्कण्डेय का व्यक्तित्त्व एवं परिवेश**

(क) अमरकान्त का व्यक्तित्त्व

(ख) मार्कण्डेय का व्यक्तित्त्व

(ग) अमरकान्त का युगीन परिवेश

(घ) मार्कण्डेय का युगीन परिवेश

**द्वितीय अध्याय – अमरकान्त और मार्कण्डेय का कहानी साहित्यः एक सर्वेक्षण**

(क) कहानी के सैद्धान्तिक आधार का विकास

(ख) अमरकान्त और मार्कण्डेय का कृतित्त्व (काल क्रमानुसार विशेषताएँ)

**तृतीय अध्याय – मध्यवर्गीय चेतना का सैद्धान्तिक स्वरूप**

- मध्यवर्ग सम्बन्धी अवधारणा एवं स्वरूप
- मध्यवर्ग का उद्‌भव और विकास
- वर्ग विभाजन के आधार
- मध्यवर्ग की दुर्बलताएँ एवं वैशिष्ट्य
- विदेशों में मध्यवर्ग
- भारत में मध्यवर्ग
- अन्य

**चतुर्थ अध्याय – अमरकान्त का कहानी साहित्य : मध्यवर्गीय चेतना**

(क) मध्यवर्ग का सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप

- घर परिवार और तनाव
- प्रेम एवं यौन चेतना
- नारी विमर्श
- समाजिक शोषण
- निर्धनता एवं अभाव
- रोजी रोटी की समस्या
- भूख एवं कुपोषण
- दरिद्रता एवं आर्थिक शोषण
- अन्य

(ख) मध्यवर्ग का राजनीतिक एवं धार्मिक स्वरूप

- विकृत न्याय व्यवस्था
- साम्प्रदायिकता और आम आदमी
- व्यवस्था की क्रूरता
- आक्रोश एवं विरोध
- धार्मिक रूढ़ियाँ
- धर्म की आढ़ में नारी शोषण
- जातिप्रथा
- अन्य

(ग) मध्यवर्ग का सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वरूप

- सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट
- आचार एवं व्यवहार का चित्रण

- जिजीविषा
- अकेलापन
- मध्यवर्गीय युवावर्ग और यौन कुंठाओं का चित्रण
- काम भावना
- अन्य

(घ) अमरकान्त की कहानियों में पात्र–योजना एवं चरित्र–चित्रण

**पंचम अध्याय – मार्कण्डेय का कहानी साहित्य : मध्यवर्गीय चेतना**

(क) मध्यवर्ग का सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप

- टूटते हुए संयुक्त परिवार
- पति पत्नी संबंध
- नारी का यौन शोषण
- रूढ़ि – परंपरा से ग्रस्त ग्रामीण नारी
- अकाल
- ऋण ग्रस्त किसान मजदूर
- गरीबी
- बेरोजगारी
- अन्य

(ख) मध्यवर्ग का राजनीतिक एवं धार्मिक स्वरूप

- आजादी और मोहभंग
- भ्रष्ट सरकारी ऑफिसर
- न्याय व्यवस्था के प्रति आक्रोश

- जाति केन्द्रित राजनीति
- धार्मिक पाखंड
- अंधविश्वास
- देवी–देवताओं की पूजा
- भूत–प्रेत में विश्वास
- अन्य

(ग) मध्यवर्ग का सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वरूप

- सांस्कृतिक पर्व एवं त्यौहार
- अनुष्ठान एवं संस्कार
- विदाई समारोह
- लोकगीत
- हीनता की भावना
- तनाव, कुंठा, संत्रास, घुटन
- एकाकीपन
- पात्रों में मनोविज्ञान के विविध रूप
- अन्य

(घ) मार्कण्डेय की कहानियों में पात्र–योजना एवं चरित्र–चित्रण

**षष्ठ अध्याय – अमरकान्त एवं मार्कण्डेय की कहानी साहित्य का शिल्पगत वैशिष्ट्य**

(क) अमरकान्त की कहानी साहित्य का शिल्पगत वैशिष्ट्य

(i) भाषागत वैशिष्ट्य

(ii) शिल्पगत वैशिष्ट्य

(ख) मार्कण्डेय की कहानी साहित्य का शिल्पगत वैशिष्ट्य

(i) भाषागत वैशिष्ट्य

(ii) शिल्पगत वैशिष्ट्य

**सप्तम अध्याय – अमरकांत और मार्कण्डेय की कहानियों की उपलब्धियाँ एवं मूल्यांकन**

**उपसंहार**

**परिशिष्ट**

1. आधार ग्रन्थ
2. सहायक ग्रन्थ
3. पत्र पत्रिकाएँ
4. कोश / विश्वकोश

# परिशिष्ट

## आधार ग्रन्थ


1. जिन्दगी और जोंक : अमरकान्त, नया साहित्य प्रकाशन इलाहाबाद, 1958
2. देश के लोग : अमरकान्त, धारा प्रकाशन, इलाहाबाद, 1964
3. मौत का नगर : अमरकान्त, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1973
4. एक धनी व्यक्ति का बयान : अमरकान्त, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1997
5. सुख और दुख का साथ : अमरकान्त, लोकभारती प्रकाशन, 2002
6. मित्र मिलन : अमरकान्त, भारतीय साहित्य संग्रह, 2011
7. कुहासा : अमरकान्त, कृतिकार प्रकाशन, इलाहाबाद, 1983
8. औरत का क्रोध : अमरकान्त, राजकमल प्रकाशन, 2011
9. प्रतिनिधि कहानियाँ : अमरकान्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
10. अमरकांत की संकलित कहानियाँ : अमरकान्त, नेशनल बुक ट्रस्ट दिल्ली, 2011
11. मेरी प्रिय कहानियाँ : अमरकान्त, राजपाल एण्ड सन्स, नयी दिल्ली, 2014
12. महुए का पेड़ : मार्कण्डेय, लहर प्रकाशन, इलाहाबाद, 1955
13. हंसा जाई अकेला : मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, 1957
14. भूदान : मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद, 1958
15. पान–फूल : मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद, 1961
16. माही : मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962
17. सहज और शुभ : मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद, 1964
18. बीच के लोग : मार्कण्डेय, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद, 1975

# सहायक ग्रन्थ


1. आधुनिक हिन्दी कहानी चरित्र बोध : डॉ० उषा गुप्ता, ज्योति इन्टरप्राइजिज, 2004
2. आठवें दशक की हिन्दी कहानी दाम्पत्य सम्बंधों के सन्दर्भ में : मधु सिंह, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, 1993
3. कुछ कहानियाँ कुछ विचार : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1998
4. कहानी का समाजशास्त्र : डॉ. मधु सन्धु, निर्मल पब्लिकेशन्स दिल्ली 2005
5. कहानी का समाजशास्त्रीय समीक्षा : रमेश उपाध्याय, नमन प्रकाशन नयी दिल्ली, 1999
6. कहानी नयी कहानी : डॉ. नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन 2006
8. नयी कहानी की भूमिका : कमलेश्वर, परमहंस प्रेस, 1978
9. नई कहानी नए सवाल : सत्यकाम, अनुपम प्रकाशन, 2002
10. नयी कहानी सन्दर्भ और प्रकृति : देवीशंकर अवस्थी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1973
11. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त : गोविन्द त्रिगुणायत, एस.चन्द एण्ड कम्पनी (प्रा.) लि. दिल्ली 1974
12. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी – चरित्र की अवधारणा : डॉ. नीलिमा वर्मा, यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा.लि. जयपुर 2004
13. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में विचार तत्त्व : सरोज गुप्ता, भारतीय कला प्रकाशन, 1999
14. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में सामाजिक परिवर्तन : डॉ. भैरू लाल गर्ग, चित्रलेखा प्रकाशन 1979

15. हिन्दी का गद्य साहित्य : रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी,

16 हिन्दी कहानी : यथार्थवादी नजरिया, मार्कण्डेय, लोक भारतीय प्रकाशन इलाहाबाद, 2013

17. हिन्दी उपन्यास का विकास और मध्यवर्गीय चेतना : बीना श्रीवास्तव मैकमिलन प्रकाशन, दिल्ली, 1981

18. हिन्दी कहानी का सफरनामा : धनंजय वर्मा, प्रवीण प्रकाशन नई दिल्ली, 2001

## पत्र पत्रिकाएँ

- आजकल
- अनहद
- तद्भव
- समकालीन भारतीय साहित्य
- साहित्य अमृत
- साहित्य और संस्कृति
- हिन्दुस्तानी
- हंस